■ **फासीवाद क्या है?**

- पूँजीवाद के इस संकट ने अर्थात् विश्व आर्थिक मंदी ने एक व्यापक आर्थिक एवं राजनीतिक उथल-पुथल को जन्म दिया। इसका सामना करने के क्रम में एक उग्र प्रकार की राष्ट्रवादी विचारधारा को बल मिला। इसे 'फासीवाद' के नाम से जाना जाता है।
- फासीवाद को परिभाषित करना अथवा उसके स्वरूप का निर्धारण करना विद्वानों के बीच एक बड़ा विवादास्पद मुद्दा रहा है। इसका कारण है फासीवाद के मॉडल को किसी स्पष्ट सिद्धांत के बजाय नेताओं के व्यवहार पर टिका होना अर्थात् यह बहुत हद तक अवसरवाद पर आधारित था क्योंकि फासीवादी नेताओं ने सत्ता प्राप्त करने अथवा सत्ता पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए सभी तरह के तरीकों का प्रयोग किया तथा वे अपनी सुविधा के अनुकूल अपनी विचारधारा को भी बदलते रहे थे। उदाहरण के लिए, आरंभ में मुसोलिनी ने समाजवादी होने का नाटक किया था, वहीं 1922 ई. में उसने यह घोषित कर दिया कि "मैं समाजवाद के विरुद्ध जंग छेड़ता हूँ।"
- फिर भी अगर हम इसमें विचारधारा का तत्व खोजने का प्रयास करते हैं, तो हमें यह ज्ञात होता है कि यह एक सुस्पष्ट दर्शन नहीं था, बल्कि इसमें कई प्रकार के विचारों एवं दृष्टिकोणों का मिश्रण था। उदाहरण के लिए, सामाजिक डार्विनवाद, हीगेल का उग्रराष्ट्रवाद, बुद्धि विरोधवाद आदि।

■ **यूरोपीय राजनीति में फासीवादी दल के उद्भव एवं प्रसार के कारण:**

1. **छोटे दुकानदार, शिल्पी एवं कारीगर तथा दैनिक मजदूरी करने वाले कुछ मजदूर-** ये तत्व आर्थिक मंदी से परेशान थे, परंतु अपने आप को साम्यवादी आंदोलन से नहीं जोड़ना चाहते थे।
2. **प्रथम विश्वयुद्ध में पराजित हुए कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी एवं सेना**- ये अपनी पराजय और अपमान का प्रतिशोध आक्रामक विदेश नीति के माध्यम से चाहते थे, जो फासीवादी सरकार ही उन्हें दे सकती थी।
3. **पेरिस शांति सम्मेलन से विक्षुब्ध तत्व**- इस शांति सम्मेलन में इटली की जनता ने अपने को ठगा हुआ तथा जर्मनी की जनता ने अपने को अपमानित महसूस किया था। अत: इन दोनों ही राष्ट्रों में फासीदल को आसानी से समर्थन प्राप्त हो गया।
4. **विश्व आर्थिक मंदी का प्रभाव**- मंदी के कारण पूँजीपति वर्ग और जमींदार वर्ग भयभीत हो गए थे क्योंकि साम्यवाद की प्रगति हो रही थी। अत: उन्होंने फासीवाद को समर्थन दे दिया।

■ **फासीवाद का विशेषताएँ**-

- कहा जाता है कि देशकाल की परिस्थितियों के अनुसार फासीवाद पृथक्-पृथक् रूप में प्रकट होता है, परंतु उनकी कुछ मूलभूत बातों में समानता होती है-
  - संपूर्ण आंदोलन का एक नेता के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घूमना।
  - वीर पूजा की भावना।
  - उग्र राष्ट्रवाद पर बल।
  - भीड़ मनोविज्ञान से लाभ उठाना।
  - परंपरा एवं अतीत की महानता पर बल।
  - आक्रामक विदेश नीति।
  - वर्ग-संघर्ष की जगह वर्ग-समन्वय को कठोरतापूर्वक लागू करने का प्रयास।
  - प्रजातंत्र एवं समाजवाद का विरोध

■ **इटली में फासीवाद एवं मुसोलिनी**-

- 1919ई. में मुसोलिनी एवं उसके समर्थकों के द्वारा मिलान नामक स्थान पर 'फासी-डी-कॉम्बाटिमेन्टो' नामक एक फासीदल का गठन किया गया, जिसका प्रतीक चिह्न 'लकड़ी का गट्ठर' था।
- **मुसोलिनी एवं फासीदल की सफलता के कारण:-**

1. इटालियन राष्ट्रवादियों में सेंट जर्मन की संधि से गहरा असंतोष व्याप्त था क्योंकि उनके विचार में लंदन की संधि में इटली को एड्रियाटिक क्षेत्र में भू-भाग देने का जो वादा किया गया था, उसका वास्तविक अनुपालन नहीं हुआ। अत: इटालियन राष्ट्रवादियों को यह आश्वासन दिया गया कि पेरिस शांति सम्मेलन में किए गए विश्वासघात का जवाब दिया जाएगा।
2. प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् उत्पादन में गिरावट के कारण बेरोजगारी को प्रोत्साहन मिला, जिससे निम्न समूह के लोग विक्षुब्ध थे।
3. रूस की बोल्शेविक क्रांति के बाद और यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में, जिसमें इटली भी शामिल था, साम्यवादी दल की प्रगति होने लगी। इससे पूँजीपति एवं कुलीन डर गए और वे मुसोलिनी का हाथ मजबूत करने लगे।
4. मुसोलिनी के द्वारा जन-समर्थन प्राप्त करने के लिए अवसरवादी नीति को अपनाया गया। पहले वह एक समाजवादी दल से जुड़ा हुआ था, परंतु 1922 ई. में उसने

यह घोषणा की कि "हम समाजवाद के विरुद्ध जंग छेड़ते हैं।" इसके अतिरिक्त, उसने इटली के लगभग सभी वर्गों को कुछ न कुछ आश्वासन दिया था- उग्र राष्ट्रवादियों को सेंट जर्मेन की संधि के प्रावधानों को तोड़ने का आश्वासन, श्रमिकों को रोजगार का आश्वासन, पूँजीपतियों को हड़ताल से सुरक्षा का आश्वासन।

5. दूसरी तरफ, इटली में उदारवादी और साम्यवादी दलों के द्वारा मुसोलिनी की प्रगति के बावजूद भी उसे रोकने के लिए कोई गठबंधन का प्रयास नहीं किया गया।
6. आधुनिक तकनीकी; यथा- टेलीग्राफ, टेलीफोन, फोटोग्राफी, रेडियो आदि के माध्यम से अपने विचारों का प्रसार।
7. 1921 ई. के चुनाव में मुसोलिनी को सफलता नहीं मिलने के बाद, उसने बल प्रयोग का सहारा लिया। उसने अपने 50,000 कार्यकर्त्ताओं के साथ रोम की यात्रा कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। अंत में इटली का शासक विक्टर इमैनुएल तृतीय झुक गया और उसे सरकार बनाने का आमंत्रण दिया गया। इस प्रकार, मुसोलिनी प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।

- **सत्ता में आने के बाद शक्ति का केंद्रीकरण:-**

1. मुसोलिनी ने अपने आपको सैन्य विभाग, शिक्षा विभाग और न्याय विभाग के प्रधान के रूप में स्थापित किया।
2. 1928 ई. तक उसने चुनावी प्रक्रिया को ध्वस्त कर दिया। अब केवल फासीदल के द्वारा प्रस्तावित लोग ही चुनाव लड़ सकते थे।
3. कहा जाता है कि पाठ्यपुस्तक और बंदूक एक समस्त फासीवादी दल का गठन करती है। इसलिए मुसोलिनी के द्वारा पाठ्यपुस्तक में संशोधन लाकर 317 पुस्तकों की जगह एक पुस्तक को लागू किया गया।
4. 'ओवरा' नामक गुप्त पुलिस संगठन की सहायता से उसने अपने विरोधियों का सफाया कर दिया।
5. 1929-30 ई. की आर्थिक मंदी का सामना करने के लिए उसने दो प्रकार के उपाय किए-

i. निगमित राज्य व्यवस्था का विस्तार करते हुए संपूर्ण अर्थव्यवस्था को उसके अंतर्गत ले आया गया। संपूर्ण अर्थव्यवस्था को 7 भागों में बाँटा गया और प्रत्येक क्षेत्र में नियोक्ता एवं नियुक्त के पृथक्-पृथक् संगठन बनाए गए और उन्हें एक निगम के अंतर्गत रख दिया गया। 1932 ई. तक इस प्रकार के निगमों की संख्या बढ़कर 22 हो गई, फिर भी आर्थिक मंदी का सामना नहीं किया जा सका।

ii. युवकों को रोजगार देने के लिए उसने सैनिक भर्ती आरंभ की और 3 लाख लोगों को सेना में नियुक्त किया। फिर सैनिकों की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए उसने इथियोपिया पर 1935 ई. में आक्रमण कर दिया। अत: उसकी आर्थिक नीति युद्ध की ओर चली गई।

■ मुसोलिनी की विदेश नीति -

- **उद्देश्य:-**

1. अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इटली को सम्मानित स्थान दिलाना एवं महान शक्तियों के समानान्तर उसे स्थापित करना।
2. भूमध्यसागरीय क्षेत्र एवं अफ्रीका में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना करना।

- **इस संधि के उल्लंघन के क्रम में निम्नलिखित कदम उठाए गए:-**

1. पेरिस के शांति सम्मेलन में फ्यूम बंदरगाह के प्रश्न पर इटली एवं यूगोस्लाविया के बीच विवाद था। 1920 ई. में मित्र राष्ट्रों ने फ्यूम को स्वतंत्र बंदरगाह बना दिया, परन्तु 1924 ई. में मुसोलिनी ने यूगोस्लाविया के साथ समझौता कर फ्यूम बंदरगाह पर कब्जा कर लिया।
2. इसी तरह, अल्बानिया को पेरिस शांति सम्मेलन में स्वतंत्रता मिल गई थी, परन्तु इटली द्वारा आर्थिक मदद् देकर अल्बानिया को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले आया गया। 1927 ई. में तिराना की संधि द्वारा अल्बानिया, इटली का संरक्षित राज्य बन गया।
3. मुसोलिनी ने यूनान के कोर्फू पर आक्रमण किया, परन्तु इंग्लैण्ड के दबाव के कारण उसे कोर्फू खाली करना पड़ा। हालाँकि 5 करोड़ लीरा उसे क्षतिपूर्ति के रूप में प्राप्त हो गया।

- आरम्भ में फ्रांस के साथ इटली के संबंध तनावपूर्ण थे क्योंकि अफ्रीका में दोनों के साम्राज्यवादी हित टकरा रहे थे, किंतु जब 1933 ई. में जर्मनी में हिटलर का उद्भव हुआ, तो फ्रांस और इटली एक-दूसरे के करीब आ गए। 1933 ई. में 'लोवाल-मुसोलिनी पैक्ट' हुआ। आरम्भ में मुसोलिनी की दृष्टि हिटलर विरोधी थी। उसने जर्मनी के विरूद्ध जर्मनी के पड़ोसी राज्यों को सुरक्षा की गारंटी भी दी थी। किंतु जब अक्टूबर, 1935 ई. में मुसोलिनी ने इथियोपिया पर आक्रमण किया, तो लीग ऑफ नेशन्स ने उसे दंडित किया। वहीं दूसरी तरफ हिटलर ने मुसोलिनी के द्वारा जीते गए क्षेत्रों को मान्यता प्रदान कर दी तथा अस्त्र-शस्त्र से मुसोलिनी को सहायता प्रदान की। अत: 1936 ई. में 'रोम-बर्लिन' धुरी का निर्माण हुआ।

■ नाजीवाद के उद्भव को प्रेरित करने वाले कारक

1. जर्मनी में सैन्यवाद की एक लम्बी परम्परा रही थी। सैन्यवाद की यह मनोवृत्ति जर्मनी के एकीकरण तथा प्रथम विश्व युद्ध के मध्य भी अभिव्यक्त हुई थी। अगर एक तरह से देखा जाए, तो नाजीवाद का एक महत्वपूर्ण तत्व जर्मन सैन्यवाद भी था।

2. वर्साय की अपमानजनक संधि तथा आहत जर्मन राष्ट्रवाद ने नाजीवाद के उद्भव एवं विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
3. 1929–1930 ई. की विश्व आर्थिक मंदी ने नाजीवाद की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया। आर्थिक मंदी के समय जर्मनी में समाजवादी और साम्यवादी दल की प्रगति होने लगी। इस कारण से जर्मन पूँजीपति वर्ग- जुंकर वर्ग (जमींदार) घबरा गया तथा वह नाजीवाद की राजनीति से जुड़ गया।

■ **हिटलर द्वारा अपनाई गई रणनीति और युक्तियाँ-**

1. वाइमर गणतंत्र की विफलता के कारण स्वाभाविक रूप में लोग नाजीवादी कार्यक्रम की ओर आकर्षित हुए क्योंकि उन्हें प्रतीत हुआ कि नाज़ी पार्टी ही तात्कालिक समस्याओं का बेहतर समाधान ला सकती है तथा जर्मनी को एक सशक्त सरकार दे सकती है।
2. 1921 ई. तक हिटलर जर्मन राष्ट्रवाद तथा श्रमिक समाजवादी पार्टी (नाजी पार्टी) के नेता के रूप में उभरा। वह एक कुशल प्रवक्ता था तथा उसके करिश्मावादी व्यक्तित्व ने जर्मन जनता को प्रभावित किया।
3. म्यूनिख में वाइमर सरकार का तख्ता पलटने की योजना में विफल होने के बाद उसने अपनी रणनीति बदल दी तथा संसदीय संस्थाओं का उपयोग कर उसने अपनी स्थिति मज़बूत करने का निर्णय लिया।
4. उसने सत्ता हासिल करने के लिए एक सुनियोजित तरीका अपनाया। उसने न केवल वर्साय की संधि से उत्पन्न जर्मन असंतोष को भुनाना आरम्भ किया, वरन् उसने जर्मनी के लगभग सभी वर्गों को कुछ न कुछ आश्वासन दिया। जर्मन जनता को संगठित करने के लिए उसने एक दुष्प्रचार का सहारा भी लिया तथा घोषित किया कि वह जर्मनी को यहूदियों, साम्यवादियों तथा जेसुइटों से मुक्त करेगा।
5. 1929–30 ई. की विश्व आर्थिक मंदी के दुष्प्रभाव के कारण 1932 ई. के चुनाव में हिटलर को बड़ी सफलता मिली तथा नाजी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। फिर राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने हिटलर को जनवरी, 1933 ई. में चांसलर पद के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार जनवरी, 1933 में पहली बार नाजी पार्टी सरकार में शामिल हुई, किन्तु अभी भी इसे स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं था।

■ **हिटलर के द्वारा शक्ति के केन्द्रीयकरण के लिए उठाए गए कदम-**

1. सत्ता में आने के बाद हिटलर ने सर्वप्रथम वाइमर गणतंत्र के अनुच्छेद-48 का, जिसमें आपातकालीन प्रावधान था, उपयोग कर संविधान को ही स्थगित कर दिया।
2. 1934 ई. में हिंडेनबर्ग की मृत्यु के पश्चात् हिटलर ने एक जनमत संग्रह के माध्यम से चांसलर और राष्ट्रपति दोनों पदों को मिला दिया और उस पद पर स्वयं विराजमान हो गया।
3. उसने गुप्त पुलिस संगठन 'गेस्टापो' का निर्माण कर विरोधियों को अपने रास्ते से हटा दिया।
4. उसने रोजगार संवर्द्धन के लिए सार्वजनिक निर्माण के तहत निर्माण कार्य को प्रोत्साहन दिया। फिर बड़ी संख्या में सैनिकों की भर्त्ती की तथा हथियार निर्माण करने वाली फैक्ट्री स्थापित की।
5. उसने सैन्य व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था सभी पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया। सैन्य व्यवस्था के अन्तर्गत विरोधियों का सफाया कर अपने समर्थकों को महत्वपूर्ण पद प्रदान किया। अब सैनिकों को अपनी नियुक्ति में हिटलर के नाम से शपथ लेनी होती थी।
6. नाजी पार्टी ने शैक्षणिक पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन लाया। अब साहित्यकारों और कलाकारों से यह अपेक्षा की गई कि वे राज्य और नाजी पार्टी का गौरव गान करें। नाजी विचारधारा को लोकप्रिय बनाने के लिए एक मंत्रालय का भी गठन किया गया। इसे 'मिनिस्ट्री ऑफ पॉपुलर एनलाइटमेन्ट एण्ड प्रोपगेण्डा' का नाम दिया गया।
7. नाजी पार्टी ने महिलाओं को या तो महत्वपूर्ण पदों से वंचित कर दिया या उन्हें पुरूषों की तुलना में कम वेतन दिया जाने लगा। महिलाओं के लिए केवल तीन दायित्व निर्धारित किये गए- किन्डर (बच्चे), किर्च (चर्च), कुच (रसोई)।
8. 1935 ई. में हिटलर ने न्यूरेम्बर्ग कानून लाया। इसके अनुसार यहूदियों को जर्मनी की नागरिकता से वंचित कर दिया गया। आगे 1938 ई. में उन्हें जर्मनी छोड़ने का भी आदेश दिया गया तथा तत्पश्चात् यहूदियों के विरूद्ध दंगे भी भड़क उठे।

■ **हिटलर की विदेश नीति**

• **वास्तविक उद्देश्य-**

1. हिटलर की विदेश नीति का प्रथम उद्देश्य वर्साय की संधि के अपमानजनक प्रावधानों को खत्म कर जर्मनी को सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली देश बनाना था।
2. पूरब की ओर विस्तार करना- पूर्वी यूरोप के नवगठित राष्ट्रों से खोए हुए जर्मन क्षेत्र को प्राप्त करना।

• **प्रचारात्मक उद्देश्य-**

1. पूरब में यूराल पर्वत तक विस्तार कर लगभग 10 मिलियन जर्मन जनसंख्या को बसाना।
2. विश्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना।

- **हिटलर की विदेश नीति का क्रमिक विकास** –
- **प्रथम चरण (1933–1936ई.)**– इस चरण में हिटलर की विदेश नीति का उद्देश्य वर्साय की संधि का क्रमबद्ध उल्लंघन करना था। साथ ही वह यूरोपीय शक्तियों को विश्वास दिलाना चाहता था कि वह यूरोपीय व्यवस्था का रक्षक है–

1. अप्रैल, 1933ई. में उसने जर्मन सुरक्षा परिषद् का गठन कर हथियारों का निर्माण और सैनिक तैयारी आरंभ कर दी, जो वर्साय की संधि का उल्लंघन था। फिर अक्टूबर, 1933 में राष्ट्र संघ के नि:शस्त्रीकरण आयोग से वह बाहर हो गया।
2. किन्तु यूरोपीय शक्तियों को अपने विश्वास में लेने के लिए उसने 1934ई. में अनाक्रामक संधि कर ली।
3. उसी प्रकार, उसने 1935ई. में ब्रिटेन के साथ एक नौसैनिक समझौता किया जिसमें जर्मन नौसेना को सीमित रखने का आश्वासन दिया गया।
4. फिर उसने मित्र राष्ट्रों के विभाजित रूख का फायदा उठाते हुए मार्च, 1936 में राइनलैंड के असैन्यीकृत क्षेत्र में अपनी सेना भेज दी।

- **दूसरा चरण (1936–1938ई.)**– इस चरण में हिटलर क्रमिक रूप में पूरब की ओर विस्तार कर रहा था। उसकी रणनीति सैनिक दबाव तथा समझौते के बीच की स्थिति को बनाए रखने की थी। दूसरे शब्दों में, एक तरफ वह सैनिक दबाव के माध्यम से अपनी माँग को पूरा करना चाहता था, तो दूसरी तरफ वह एक खुले युद्ध का खतरा लेने के लिए भी तैयार नहीं था।

1. 1938ई. में ऑस्ट्रिया का विलय जर्मनी के साथ कर दिया।
2. 1938ई. में हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया से जर्मन बाहुल्य जनसंख्या वाले क्षेत्र सुडेंटेनलैंड को जर्मनी में मिलाने की घोषणा की। तभी ब्रिटेन एवं फ्रांस द्वारा हिटलर के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाते हुए सितम्बर, 1938 की म्यूनिख की संधि के आधार पर सुडेंटेनलैंड का क्षेत्र जर्मनी को दे दिया गया। यह तुष्टिकरण की नीति की पराकाष्ठा थी।

- **ब्रिटेन के द्वारा तुष्टिकरण की नीति अपनाने का कारण**–

1. ब्रिटेन एक अपराधबोध से ग्रसित था कि वर्साय की संधि में जर्मनी के साथ अन्याय हुआ था। अत: यह आहत जर्मन राष्ट्रवाद है जो यूरोप में क्षेत्रीय माँग कर रहा है। अगर इसे पूरा कर दिया जाए, तो जर्मन राष्ट्रवाद संतुष्ट हो जाएगा।
2. प्रथम विश्व युद्ध के बाद यूरोपीय शक्तियों का युद्ध से मोह भंग हो चुका था तथा उन्हें यह एहसास हो गया था कि युद्ध में अन्तत: दोनों पक्ष हारते हैं। इसलिए वे अन्तिम अवस्था तक युद्ध को टालने का प्रयत्न कर रहे थे।
3. ब्रिटेन नाजीवाद का उपयोग रूसी साम्यवाद के विरूद्ध भी करना चाहता था। इसलिए भी उसकी जर्मनी के प्रति दृष्टि थोड़ी नरम थी।

- **अंतिम एवं उग्र चरण (1938ई. के पश्चात्)**– हिटलर ने उग्र एवं आक्रामक नीति को अपनाते हुए मार्च, 1939ई. में संपूर्ण चेकोस्लोवाकिया को जीतकर जर्मनी में मिला लिया। इसने दो बातें स्थापित कर दीं –

1. यह आहत जर्मन राष्ट्रवाद नहीं, वरन् जर्मन साम्राज्यवाद था तथा हिटलर का निशाना महज जर्मन बहुल क्षेत्र नहीं, वरन् यूरोप का कोई भी भू–भाग था।
2. तुष्टिकरण की नीति समस्या का समाधान नहीं थी। अत: अब ब्रिटेन और फ्रांस ने पूर्वी यूरोप के अन्य देश, जिन पर जर्मनी के आक्रमण का खतरा था अर्थात् पौलैण्ड और रोमानिया को सुरक्षा की गारंटी दे दी। परन्तु तुष्टिकरण की नीति के कारण हिटलर यह जानता था कि मित्र राष्ट्र उससे पोलैण्ड के मुद्दे पर युद्ध का खतरा नहीं ले सकते। फिर अगस्त, 1939ई. में स्टालिन के साथ अनाक्रामक संधि कर उसने अपनी स्थिति मजबूत कर ली। फिर 1 सितम्बर, 1939ई. को हिटलर ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। मित्र राष्ट्रों ने 3 सितम्बर, 1939ई. को जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसी के साथ द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत हो गई।

■ **द्वितीय विश्वयुद्ध की उत्पत्ति:**

- एरिक हॉब्सबॉम के अनुसार, यह एक 31 वर्षीय युद्ध था, जो प्रथम विश्व युद्ध से प्रारम्भ होकर 15 अगस्त, 1945 को समाप्त हुआ था। इसका अर्थ है द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण प्रथम विश्वयुद्ध के परिणामों में खोजा जाना चाहिये। वस्तुत: प्रथम विश्वयुद्ध ने जितनी समस्याओं को सुलझाया

नहीं, उससे कहीं अधिक समस्याओं को जन्म दे दिया और अंतत: यह एक अन्य तथा उससे बड़े महाविस्फोट का कारण बना। इसे निम्नलिखित रूप में समझा जाना चाहिये-

1. **पेरिस शांति सम्मेलन एवं जर्मनी और इटली का असंतोष**- इस सम्मेलन में कई ऐसी संधियों पर हस्ताक्षर हुआ, जिनसे कुछ राष्ट्रों में गहरा असंतोष पैदा हुआ। वर्साय की संधि में जर्मनी अपमानित हुआ तथा सेंट जर्मेन की संधि में इटली ने अपने को ठगा हुआ सा महसूस किया। आगे चलकर इसने इटली और जर्मनी में उग्र राष्ट्रवाद के उद्‌भव का रास्ता तैयार किया।
2. **फासीवाद की प्रगति**- इटली एवं जर्मनी में उग्र राष्ट्रवाद एवं आत्मकेंद्रित पूँजीवाद की चेतना ने फासीवाद की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। फासीवाद का जर्मन रूप 'नाजीवाद' कहलाया। इटली के फासीवाद और जर्मनी के नाजीवाद ने घरेलू मोर्चे पर अपनी स्थिति को मज़बूत करने के लिये आक्रामक विदेश नीति पर बल दिया।
3. **रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी का गठन-** केवल इटली और जर्मनी ही नहीं, जापान भी मित्र राष्ट्रों की नीति से असंतुष्ट रहा था। अत: वैश्विक व्यवस्था को तोड़ने में वह जर्मनी और इटली के निकट आ गया। इसके परिणामस्वरूप रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी का गठन हुआ।
4. **राष्ट्र संघ की विफलता**- एक वैश्विक संगठन के रूप में राष्ट्र संघ की निष्पक्षता पर आरंभ से ही प्रश्नचिह्न लगा हुआ था। सोवियत रूस को इससे बाहर रखा गया था। आरंभ में पराजित राष्ट्रों को भी सदस्यता नहीं दी गई थी। इसके अतिरिक्त इसे एक कमजोर संगठन के रूप में स्थापित किया गया था। इसलिये न तो यह वैधता प्राप्त कर सका और न ही यह इटली, जर्मनी और जापान जैसे राष्ट्रों की आक्रामकता पर नियंत्रण लगाकर रख सका।
5. **मित्र राष्ट्रों में सहयोग का अभाव तथा तुष्टिकरण की नीति**- एक दु:खद पक्ष यह था कि जर्मनी को दंडित करने में ब्रिटेन और फ्राँस के बीच एकता बनी रही थी, परंतु वर्साय की संधि की कठोर शर्तों के क्रियान्वयन के मध्य उनकी एकता टूट गई। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका भी यूरोप में अपना दायित्व निभाना छोड़कर अपने महाद्वीप में वापस लौट गया।

- सबसे बढ़कर, जर्मनी और इटली के संबंध में ब्रिटेन और फ्राँस का दृष्टिकोण अलग-अलग था। जहाँ फ्राँस की दृष्टि में इटली अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिये बड़ा खतरा था, तो वहीं ब्रिटेन के विचार में जर्मनी। इसलिये जहाँ आरंभ में फ्राँस ने मुसोलिनी के प्रति नरम नीति अपनाई, वहीं ब्रिटेन ने हिटलर के प्रति। दूसरी तरफ हिटलर ने इन दोनों शक्तियों के बीच मतभेदों का फायदा उठाया।

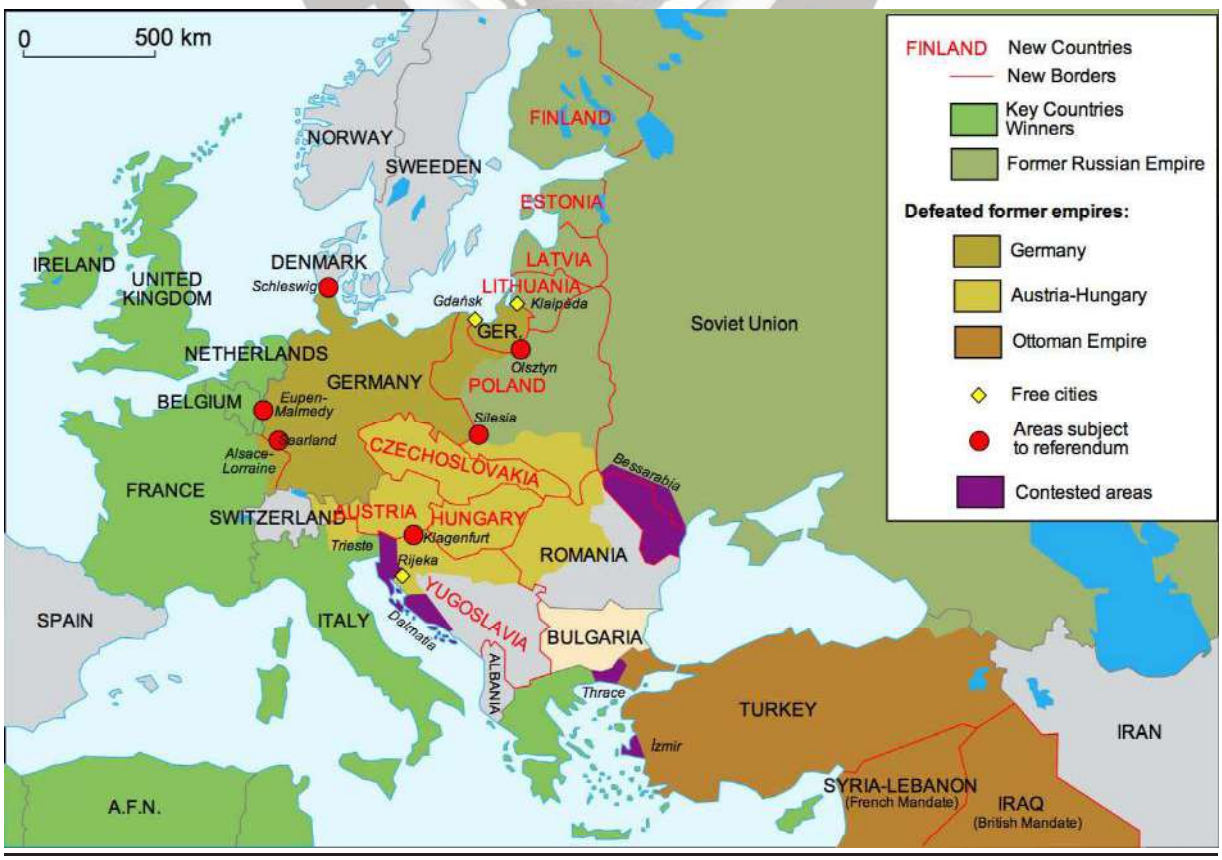

6. **विश्व आर्थिक मंदी (1929-30ई.) की भूमिका**- तमाम उथल-पुथल के बावजूद भी मित्र राष्ट्रों ने यूरोपीय व्यवस्था को बनाए रखा था तथा जर्मनी में भी हिटलर की प्रगति रुकी हुई थी। परंतु आर्थिक मंदी ने इस संतुलन को बिगाड़कर रख दिया। इसने एक व्यापक आर्थिक असंतोष को जन्म दिया। इस कारण एक तरफ जहाँ प्रजातांत्रिक शक्तियाँ कमजोर पड़ गईं, वहीं दूसरी तरफ फासीवादी ताकतों को बढ़ावा मिला। आर्थिक मंदी का फायदा उठाकर हिटलर जर्मनी में स्थापित हो गया तथा अपनी आक्रामक विदेशी नीति से उसने यूरोपीय व्यवस्था को भंग करना आरंभ कर दिया।

■ **द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों का दायित्वः**

- ब्रिटेन और फ्रांस ने संधि की कठिन शर्तों को तय करने में एक-दूसरे का सहयोग किया था, परन्तु उन्होंने संधि के क्रियान्वयन के मध्य सहयोग का प्रदर्शन नहीं किया। इसने नाजी सरकार को संधि के प्रावधानों के विरूद्ध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका भी अपने महाद्वीप में वापस लौट गया।
- मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के प्रति संतुलित नीति नहीं अपनायी। एक तरफ जहाँ म्यूनिख की संधि तक उन्होंने हिटलर के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनायी थी, वहीं दूसरी तरफ पोलैंड के मुद्दे पर सीधे तौर पर युद्ध छेड़ दिया। स्वयं हिटलर को भी इस बात का अंदाजा नहीं था।

प्रश्नः- द्वितीय विश्व युद्ध के लिए जितनी हिटलर की आक्रामक नीति उत्तरदायी थी, उतनी ही मित्र राष्ट्रों की तुष्टीकरण की नीति। परीक्षण कीजिए।

(प्रश्न-विश्लेषणः- यह प्रश्न अपने बाह्य स्वरूप में 'Hypothetical' है, परन्तु आन्तरिक संरचना में 'Argumentative' इस प्रश्न के प्रथम भाग में हिटलर की आक्रामक नीति, तो दूसरे भाग में मित्र राष्ट्रों की गलतियों की छान-बीन करनी है।)

उत्तरः द्वितीय विश्व युद्ध के घटित होने में हिटलर की बड़ी भूमिका मानी जाती है। इसे हिटलर का युद्ध कहा जाता है, परन्तु दूसरी तरफ मित्र राष्ट्रों की कुछ नीति संबंधी भूल ने इसे अवश्यम्भावी बना दिया।

एक तरफ हिटलर ने एक के बाद दूसरी आक्रामक नीति अपनाई-

- 1936ई. में राइन क्षेत्र में सेना भेजकर वर्साय की संधि का खुला उल्लंघन।
- 1938ई. में ऑस्ट्रिया का विलय।
- सितम्बर, 1938 की म्यूनिख की संधि में चेकोस्लोवाकिया से जर्मन क्षेत्र प्राप्त करने के पश्चात् भी संपूर्ण चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा करना।
- फिर अन्त में पोलैण्ड पर आक्रमण कर युद्ध की स्थिति उत्पन्न करना।

किन्तु दूसरी तरफ मित्र राष्ट्रों की नीति में संतुलन का अभाव रहा था। ब्रिटेन एवं फ्रांस ने आरम्भ में हिटलर के प्रति नरम नीति अपनायी। म्यूनिख की संधि तक वे हिटलर को संतुष्ट करने का प्रयास करते रहे, वहीं पोलैण्ड के मुद्दे पर सीधी जंग। संभवतः हिटलर ने इस हद तक नहीं सोचा था।

इसलिए मित्र राष्ट्र भी द्वितीय विश्व युद्ध घटित होने के दायित्व से मुक्त नहीं किए जा सकते।

प्रश्नः- प्रथम विश्व युद्ध चार वर्षों का नहीं, बल्कि 31 वर्षों का युद्ध था जो जुलाई, 1914 में आरंभ होकर अगस्त, 1945 में खत्म हुआ। परीक्षण कीजिए।

(प्रश्न-विश्लेषणः- यह प्रश्न अभिव्यक्ति में एक 'Hypothetical' प्रश्न दिखता है, परन्तु यह अभ्यर्थी से आलोचनात्मक सोच (critical thinking) की अपेक्षा रखता है। अतः व्यवहार में इसक स्वरूप 'Argumentative' हो जाता है।)

उत्तरः इतिहासकारों का एक वर्ग विश्व युद्ध को पृथक युद्ध न मानकर एक समग्र युद्ध मानता है तथा उसे निरन्तरता में देखता है। प्रथम विश्व युद्ध ने जितने मुद्दों को नहीं सुलझाया, उससे कहीं अधिक मुद्दों को जन्म दे दिया, जिस कारण द्वितीय विश्व युद्ध घटित हुआ। अतः यह महज 20 वर्षों का युद्ध विराम माना जाता है।

इसे निम्नलिखित रूप में सिद्ध किया जा सकता है-

- जर्मनी एवं फ्रांस की वैमनस्यता प्रथम विश्व युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण रही थी, परन्तु इस युद्ध के पश्चात् जर्मनी को दिए जाने वाले कठोर दण्ड के कारण शत्रुता और भी बढ़ गई।
- विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम में मध्य एवं पूर्वी यूरोप के अल्पसंख्यक समूहों को आत्मनिर्णय का अधिकार देकर तनाव समाप्त करने का दावा किया गया था, परन्तु नये राष्ट्र के निर्माण ने अल्पसंख्यक वर्ग की समस्या का समाधान करने के बजाय उसे और भी बढ़ा दिया।
- उग्र-राष्ट्रवाद को दबाने एवं स्थायी शांति स्थापित करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन राष्ट्र संघ की स्थापना की गई, परन्तु राष्ट्र संघ स्वयं ही उग्र-राष्ट्रवाद का शिकार हो गया।

इस प्रकार, प्रथम विश्व युद्ध 31 वर्षों का युद्ध सिद्ध हुआ।

प्रश्नः- किस सीमा तक जर्मनी को दो विश्वयुद्धों का कारण बनने का जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? समालोचनात्मक चर्चा कीजिए। (UPSC-2015)

प्रश्न का अर्थ-अन्वेषणः- *यह प्रश्न दो विश्वयुद्धों को मिलाकर बनाया गया है। 2013 में प्रथम विश्व युद्ध का 100*

वर्ष पूरा हुआ है। इसलिए विश्वयुद्धों पर विद्वानों का ध्यान एक बार फिर आकर्षित हुआ है। हाल में इन पर कुछ नयी पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं। वस्तुतः अनेक विद्वान विश्व युद्ध को दो अलग-अलग युद्ध में न देखकर 31 वर्षों का एक बड़ा युद्ध मानते हैं। फिर इस प्रश्न की माँग को स्पष्ट करने के लिए दो शब्दों पर ध्यान रखना आवश्यक है 'किस सीमा तक' तथा 'समालोचनात्मक चर्चा कीजिए'। इसका अर्थ है कि जर्मनी के दायित्व को निर्धारित करते हुए अन्य यूरोपीय शक्तियों को भी दायित्व से मुक्त नहीं किया जा सकता।

मॉडल उत्तरः- वर्साय की संधि के अनुच्छेद 31 के अनुसार युद्ध का संपूर्ण दायित्व जर्मनी के ऊपर लाद दिया गया। यह बहुत ही स्वाभाविक था क्योंकि जर्मनी पराजित पक्ष में शामिल था तथा विजेता पक्ष अपने ढंग से उस पर संधि के प्रावधानों को आरोपित कर रहा था। परंतु इस संबंध में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले तथ्यों की गहराई से छानबीन करने की जरूरत है।

जर्मनी के एकीकरण के पश्चात् विलियम कैसर के नेतृत्व में जर्मनी ने बिस्मार्क की नीति को उलटते हुए अनियंत्रित विस्तार पर बल दिया। उसने ब्रिटिश साम्राज्य को सीधी चुनौती दी। विलियम कैसर के द्वारा अखिल जर्मनवाद के नारे ने यूरोप में एक नये तनाव को जन्म दिया। इसके अतिरिक्त, बाल्कन क्षेत्र में जर्मनी का कोई प्रत्यक्ष हित न होने के बावजूद भी जर्मनी, ऑस्ट्रिया के पक्ष में इस मामले में उलझ गया। फिर जुलाई, 1914ई. में सर्बिया के विरूद्ध ऑस्ट्रिया को समर्थन देकर उसने युद्ध की परिस्थिति उत्पन्न कर दी।

परंतु दूसरी तरफ अन्य यूरोपीय देश भी निर्दोष नहीं माने जा सकते। रूस का सर्बिया के पक्ष में खड़ा होना, फ्रांस का रूस के पक्ष में खड़ा हो जाना तथा युद्ध के आरंभ होने तक ब्रिटेन के अस्पष्ट रूख जैसे कारकों ने युद्ध की संभावना को और भी बढ़ा दिया।

जहाँ तक दूसरे विश्वयुद्ध का सवाल है, तो इसे तो हिटलर का युद्ध ही माना जाता है। बताया जाता है कि वह वर्साय की संधि के एक के बाद दूसरे प्रावधानों का उल्लघंन करते हुए यूरोपीय व्यवस्था को तोड़ रहा था। यूरोप में उसकी क्षेत्रीय माँग अतृप्त थी। राष्ट्रसंघ की अवेहलना करते हुए उसने शस्त्रीकरण को आरंभ किया। फिर ऑस्ट्रिया पर नियंत्रण स्थापित किया। इसके पश्चात् म्यूनिख समझौते के माध्यम से चेकोस्लोवाकिया से सुडेनटेनलैंड मिलने के बावजूद भी उसने संपूर्ण चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया। अंत में पोलैंड पर आक्रमण पर उसने यूरोपीय शक्तियों को सीधी चुनौती दे डाली। इस प्रकार उसने मित्र राष्ट्रों के समक्ष युद्ध के अतिरिक्त दूसरा विकल्प नहीं छोड़ा।

परंतु दूसरी तरफ दो महत्वपूर्ण बातों पर गौर करना आवश्यक है। प्रथम, वर्साय की कठोर संधि ने यूरोप में कभी भी शांति का माहौल कायम नहीं रहने दिया था। इसी कठोर संधि ने हिटलर की तानाशाही सरकार को वैधता दिला दी। दूसरे, हिटलर के प्रति मित्र राष्ट्रों की नीति में तर्कसंगतता नहीं थी। एक तरफ तो म्यूनिख संधि में उन्होंने हिटलर के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाते हुए उसकी माँग को स्वीकृति दे दी। इससे हिटलर को विश्वास हो गया कि मित्र राष्ट्र उसके विरूद्ध युद्ध नहीं कर सकते। दूसरी तरफ आगे पौलेंड के मुद्दे पर सीधे तौर पर उन्होंने युद्ध छेड़ दिया। अतः हिटलर भी आश्चर्यचकित रहा। वह इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था।

इस प्रकार विश्वयुद्धों के लिए जर्मनी बहुत हद तक उत्तरदायी है, परंतु इनमें हम अन्य यूरोपीय शक्तियों की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते।

प्रश्न : फासीवाद के उद्भव का कारण बताइए। (UPSC-2013)

उत्तरः फासीवाद एक दक्षिणपंथी उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा थी, जो क्रमबद्ध एवं सुसंगत नहीं थी। इसमें भिन्न एवं परस्पर विरोधी विचारों का मिश्रण था अर्थात् इसमें बुद्धि-विरोधवाद, हिगेल का आदर्शवाद, उग्र राष्ट्रवाद, अवसरवाद कई तत्वों का मिश्रण था। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् की परिस्थितियों ने यूरोप में फासीवाद के उद्भव के लिए उर्वर भूमि तैयार की थी।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् पेरिस शांति सम्मेलन में इटली को सेंट जर्मेन की संधि से असंतोष हुआ, वहीं जर्मनी ने वर्साय की संधि में राष्ट्रीय अपमान महसूस किया। स्वाभाविक रूप में फासीवाद की सर्वाधिक उग्र अभिव्यक्ति इटली एवं जर्मनी में ही देखी गई। फिर फासीवाद के उद्भव में उग्र राष्ट्रवाद की भावना के साथ वर्गीय हित भी जुड़ गया था। जैसा कि हम जानते हैं कि प्रथम विश्वयुद्ध के मध्य रूसी क्रांति घटित हुई तथा इसके साथ ही विश्व की पहली साम्यवादी सरकार स्थापित हो गई। यह पूँजीवादी व्यवस्था के लिए एक चुनौती थी। अतः प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् समाजवादी विचारधारा का प्रसार आरंभ हो गया था। सबसे बढ़कर 1929-30ई. की आर्थिक मंदी के पश्चात् समाजवादी विचारधारा का तेजी से प्रसार शुरू हुआ। इसके कारण यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए बुर्जुआ भयभीत हो गए तथा उन्होंने दक्षिणपंथी तथा उग्र राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित राजनीतिक दल का समर्थन आरंभ कर दिया। इटली में मुसोलिनी को पूँजीपति एवं जमींदारों का समर्थन प्राप्त हुआ था। उसी प्रकार जर्मनी में जर्मन जुंकर वर्ग (जमींदार वर्ग) एवं पूँजीपति वर्ग ने हिटलर का हाथ मजबूत करना आरंभ कर दिया। वैसे तो स्पष्टतः तीन ही देशों में; यथा- इटली, जर्मनी एवं स्पेन में फासीदल की सरकार स्थापित हुई

थी, किंतु यूरोप के 28 देशों में से 16 देशों में फासीदल की प्रगति होने लगी थी।

अब जहाँ तक फासीवाद के वैचारिक आधार का सवाल है, तो हम कह सकते हैं कि इसे अंत:प्रेरणा 19वीं सदी के चिंतक नित्से एवं फ्रायड के विचारों से ही मिलने लगी थी। जहाँ नित्से ने तर्कवाद पर प्रहार किया, वहीं फ्रॉयड ने अवचेतन मन के महत्व पर बल दिया। स्वाभाविक रूप में 'आस्था' का महत्व बढ़ गया। फासीवाद ने भी तर्कवाद को अस्वीकार कर 'आस्था' को अपना आधार बनाया। इस प्रकार फासीवाद जटिल परिस्थितियों की उपज था।

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR